IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

विज्ञान संकाय के शिक्षकों के व्यक्तित्व का विद्यार्थियों की रूचि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन

निर्देशिका
डॉ. शिप्रा गुप्ता
रीडर

प्रस्तुतकर्त्री
अपूर्वा शर्मा
एम.एड.छात्रा

सारांश –

शिक्षक ही विद्यालय तथा शिक्षा पद्धति की वास्तविक गत्यात्मक शक्ति है आकर्षण व्यक्तित्व वाले अध्यापक को छात्रों द्वारा पसंद किया जाता है। शिक्षक के च्यक्तित्व में शिक्षण का तरीका, अन्त–क्रिया आदि बातें सम्मिलित होती है। अध्यापक कक्षा–कक्ष का वातावरण रूचिकर बना सकता है रूचि वह वस्तु होती है जो किसी भी व्यक्ति को भविष्य में आगे बढ़ने की राह दिखाती है तो उसे यह आसानी से समझ आ जाता है।

प्रस्तुत अध्ययन में शोधकर्त्री द्वारा सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है और आंकड़ों के संग्रहण हेतु स्वनिर्मित प्रश्नावली का प्रयोग किया है। न्यादर्श के रूप में जयपुर जिले के राजकीय व निजी माध्यमिक स्तर के 20 विज्ञान शिक्षक व 100 विद्यार्थियों का चयन किया गया है। निष्कर्ष के रूप में कहा जा सकता है कि विज्ञान विषय के शिक्षकों के व्यक्तित्व का माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की रूचि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन में सार्थक अंतर पाया जाता है।

प्रस्तावना –

वर्तमान में 21वीं शताब्दी में समाज का विकास औद्योगिक व विज्ञान के कारण हो रहा है। प्रत्येक व्यक्ति की आवश्यकता विज्ञान की उपलब्धियों व आविष्कार पर आधारित है। इसलिए यह कहा जा सकता है कि विज्ञान जीवन का मूल आधार बन चुका है जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में प्रगति एवं उन्नति शिक्षा के माध्यम से ही हो सकती है। विद्यालय भावी राष्ट्र का निर्माण स्थल है, जहाँ राष्ट्र की भावी पीढ़ी को जीवन के सभी क्षेत्रों में संघर्षरत् रहकर कार्य करते रहने की शिक्षा दी जाती है। एक अच्छे सुसंस्कृत और विकसित राष्ट्र का निर्माण विद्यालयों की कक्षा में होता है, जिसके निर्माणकर्त्ता अध्यापक ही होते है। माना जा सकता है कि शिक्षा के विकास में अध्यापक भी एक अच्छी भूमिका निभा सकता है।

किसी भी व्यक्ति के व्यक्तित्व निर्माण में बहुत सारे गुणों का समावेष होना आवश्यक है एक सफल शिक्षक के लिए एक अच्छे व्यक्तित्व का होना

आवश्यक है परन्तु क्या व्यक्तित्व कोई स्थायी प्रत्यय है या नहीं या समय–समय इसका स्वरूप बदलता है।

समस्या का औचित्य –

प्रस्तुत शोध में शोधकर्त्री ने कुछ पहले किए गए शोध को पढ़ा तथा उन पर विचार किया किस प्रकार शिक्षा के विकास में अध्यापक की भूमिका सबसे महत्वपूर्ण होती है। एक अच्छे सुसंस्कृत और विकसित राष्ट्र का निर्माण विद्यालयों की कक्षा में होता है जिसके निर्माणकर्ता अध्यापक ही होते है। शिक्षक अपने व्यवहार तथा जान के विभिन्न अंगो के प्रभाव से बालक के व्यवहार ने परिवर्तन व सुधार करता है जिससे बालक सम्यक विकास की ओर अग्रसर होता है विद्यालय में बालक के व्यवहार को प्रभावित करने वाले बहुत से तत्व हो सकते है इसमें शिक्षक का व्यवहार, अन्य हस्तक्षेपी चर भी सम्मिलित होते है जो कभी बालकों का विकास करते है तो कभी बाधक बन सकते है।

तकनीकी शब्दों का परिभाषीकरण –

(क) व्यक्तित्व–

आलपोर्ट के अनुसार :– 'व्यक्तित्व व्यक्ति के भीतर उन मनोदैहिक गुणों का गत्यात्मक संगठन है जो परिवेश के प्रति होने वाले अपूर्व समायोजन को निर्धारित करता है।'

(ख) रूचि :–

क्रो एण्ड क्रो के अनुसार :–

"रूचि एक प्रेरक शक्ति है, जो हमे किसी व्यक्ति या क्रिया के प्रति ध्यान देने के लिए प्रेरित करती है।"

शोध के उद्देश्य –

- राजकीय विद्यालयों के विज्ञान संकाय के शिक्षकों के व्यक्तित्व का अध्ययन करना।
- निजी विद्यालयों के विज्ञान संकाय के शिक्षकों के व्यक्तित्व का अध्ययन करना।
- राजकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों की विज्ञान विषय में रूचि का अध्ययन करना।
- निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों की विज्ञान विषय में रूचि का अध्ययन करना।
- राजकीय व निजी विद्यालयों के विज्ञान संकाय के शिक्षकों के व्यक्तित्व का छात्रों की अभिरूचि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।

,

शोध के परिकल्पना –

1. राजकीय विद्यालयों के विज्ञान संकाय के शिक्षकों के व्यक्तित्व का विद्यार्थियों की रूचि पर प्रभाव पड़ता है।
2. निजी विद्यालयों के विज्ञान संकाय के शिक्षकों के व्यक्तित्व का विद्यार्थियों की रूचि पर प्रभाव पड़ता है।
3. राजकीय व निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों की विज्ञान विषय में शिक्षकों के व्यक्तित्व का विद्यार्थियों की रूचि पर प्रभाव पड़ता है।

शोध की विधि –

प्रस्तुत शोध कार्य में शोधकर्त्री द्वारा सर्वेक्षण विधि का चयन किया गया है।

जनसंख्या –

प्रस्तुत शोध कार्य में शोध हेतु जयपुर शहर के राजकीय व निजी विद्यालयों के शिक्षकों का चयन जनसंख्या के रूप में किया गया है।

शोध में प्रयुक्त न्यादर्श –

प्रस्तुत शोध में शोधकर्त्री द्वारा न्यादर्श के रूप में जयपुर जिले के 20 विज्ञान अध्यापक व 100 विद्यार्थी का चयन उद्देश्यपरक रूप से किया गया है।

शोध में प्रयुक्त उपकरण –

शोधकर्त्री द्वारा उपकरण के रूप में स्वनिर्मित प्रश्नावली का प्रयोग किया गया है।

सांख्यिकीय प्रविधियाँ –

प्रस्तुत शोध कार्य में सांख्यिकी के रूप में सहसंबंध का प्रयोग किया गया है।

शोध का परीसीमांकन –

- समस्या का क्षेत्र व्यापक होने के कारण सम्पूर्ण क्षेत्र का अध्ययन संभव नहीं है अतः प्रस्तुत शोध जयपुर जिले तक सीमित रखा गया।
- प्रस्तुत शोध में माध्यमिक स्तर के छात्रों को लिया गया।
- प्रस्तुत शोध में स्वनिर्मित उपकरण प्रश्नावली का उपयोग किया गया। प्रस्तुत अध्ययन में शोध कार्य हेतु सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया।

आँकड़ों का विश्लेषण –

राजकीय व निजी विद्यालयों के विज्ञान विषय के शिक्षकों के व्यक्तित्व का विद्यार्थियों की रूचि पर प्रभाव पड़ता है।

क्र.सं.	समूह	सहसंबंध
1	राजकीय विद्यालय के शिक्षक व विद्यार्थी	0.61
2	निजी विद्यालय के शिक्षक व विद्यार्थी	0.66

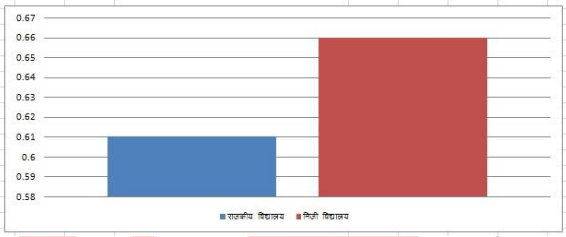

उपरोक्त सारणी से अवलोकन से स्पष्ट होता है कि राजकीय विद्यालय के विद्यार्थियों की विज्ञान विषय के शिक्षकों के व्यक्तित्व का सहसंबंध 0.61 प्राप्त हुआ जबकि निजी विद्यालय के विद्यार्थियों की विज्ञान विषय के शिक्षकों के व्यक्तित्व का सहसंबंध 0.68 प्राप्त हुआ अर्थात् दोनों में सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।

शोध निष्कर्ष –

- राजकीय विद्यालयों के विज्ञान संकाय के शिक्षकों के व्यक्तित्व में सार्थक अंतर नहीं पाया गया।
- निजी विद्यालयों के विज्ञान संकाय के शिक्षकों के व्यक्तित्व में सार्थक अंतर नहीं पाया गया।
- राजकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों की विज्ञान विषय में रूचि में सार्थक अंतर नहीं पाया गया।
- निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों की विज्ञान विषय में रूचि में सार्थक अंतर नहीं पाया गया।
- राजकीय व निजी विद्यालयों के विज्ञान संकाय के शिक्षकों के व्यक्तित्व का छात्रों की अभिरूचि पर पड़ने वाले प्रभाव में सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

भावी शोध हेतु सुझाव –

कोई भी शोधकार्य अपने आप में सम्पूर्णता लिए नहीं है।

- प्रस्तुत शोध में न्यादर्श के रूप में राजकीय व निजी विद्यालय की शिक्षक व छात्राओं का चुनाव किया गया। अतः ग्रामीण व शहरी क्षेत्र की बालिकाओं को सम्मिलित करना भी वांछनीय है।

अतः शोधार्त्री द्वारा लघु प्रयास है अतः इस क्षेत्र में विस्तृत अध्ययन किया जाना उचित है।

संदर्भ ग्रंथ सूची –

- eklavya.in
- http://hdl.handle.net/10603/32209
- http://hdl.handle.net/10603/340098
- Shodhganga.inflibnet.ac.in
- Sanskriti aur sanajik anusandhan
- www.shodhjuornal.com (14-03-2020)
- Fromm.jagran.com.cdn
- Scert.cg.gov.in med.minar.reserach collection
- http://sarkariguider.in
- http://ijassonline.in